AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open access & Indexed
Volume 04 | Issue 10 | October 2023 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 26-34

पुस्तकालय सेवाओं में स्वचालन सॉफ्टवेयर एंव तकनीकों का उपयोग : एक अध्ययन

[1]त्रिभुवन कुमार मिर्चे एंव [2]लाकेश कुमार साहू

1) असिस्टेंट लाईब्रेरियन, श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस,रायपुर छत्तीसगढ़
2) असिस्टेंट प्रोफेसर, मैट्स स्कूल ऑफ लाइब्रेरी साइंस, मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर, छत्तीसगढ़

सारांश:

पुस्तकालय में कम्प्यूटर के प्रयोग से पुस्तकालय की महत्व में वृद्धि हुई है। इसका उपयोग पुस्तकालय में पुस्तक सूची पर नजर रखने और पुस्तकालय प्रबंधन में कार्य कुशलता लाने के उद्देश्य से किया जाता है। इस तकनीकी में पुस्तकों एंव अन्य पाठ्य सामग्री में आरएफआईडीटैग लगाया जाता है। जो कि रेडियों तरंगों के द्वारा उनकी पहचान या ट्रैकिंग करने में सक्षम होता है। इस पत्र के माध्यम से पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय सॉफ्टवेयरों का विकास किया गया है। जिसके द्वारा पुस्तकालय का स्वचालन किया जा सकता है। पुस्तकालय स्वचालन कार्य से सबसे बड़ा फायदा यह हुआ की पुस्तकालय में आने वाले पाठकों का समय बचाया जा सकें । जिसमें एक आरएफआईडी तकनीक है जिसके द्वारा परिचालन का कार्य चंद मिनटों में किया जा सकता है। इस शोध पत्र में विभिन्न सॉफ्टवेयरों की मदद से पुस्तकालयों का स्वचालन कार्य किया जा रहा है। इस शोध पत्र में डेलनेट, सोल, कोहा मार्क एंव अन्य आदि युक्तियों का प्रयोग करके पुस्तकालयों को डिजिटलीकरण किया जा रहा है। जिससे पाठक एंव कर्मचारियों के समय को बचाया जा सकता है तथा भौतिक संसाधनों को संग्रहित करने में आसानी हो जाती है और साथ–साथ पुस्तकों को भौतिक रूप से रखने की समस्या से भी बचा जा सकता है।

मुख्य शब्द: अनुक्रमणिका, मशीन पाठ्य, पुस्तकालय स्वचालन, पुस्तकालय आधुनिकीकरण।

परिचय :

पुस्तकालय में कम्प्यूटर के प्रयोग होने का प्रारम्भ वर्ष 1950 के दशक से माना जाता हैं। डॉ. एच पी लुहान ने सबसे पहले कम्प्यूटरीकृत अनुक्रमणिका क्विक की संरचना की। पहले पुस्तकालयों में कम्प्यूटर का

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Lakesh Kumar Sahu Assistant Professor, MATS School of library science, MATS University, Raipur, Chattisgarh Email: lakeshks@matsuniversity.ac.in	

उपयोग नही होता था तब पुस्तकालयों में यांत्रिक विधियों का प्रयोग करके काम किया जाता था। कहने का मतलब यह है कि पहले पुस्तकालयों में सभी कार्यों को करने के लिए हमें बहुत समय लगता था लेकिन जब से पुस्तकालयों में कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है तब से पुस्तकालय मे पाठक के पठन में बहुत से बदलाव आये है। पाठक से साथ–साथ पुस्तकालय में भी बहुत से बदलाव आये है। कम्प्यूटर के आने से पुस्तकालय के सभी काम हम कम्प्यूटर में करने लगे हैं। जिसे कि पहले हमे पुस्तकालय का काम करने में जो समय लगता था उसे कम समय में हमारा काम कम्प्यूटर से हो जाता है। कम्प्यूटर के आने से पाठक को पाठन में बहुत असानी होती है पाठक को जो उनके काम का मटेरियल होता है वह उसे कम्प्यूटर से प्राप्त कर सकता है।

साहित्य समीक्षा:

1. **व्यास, एस. डी. (1990)–** इस पत्र में लेखक महोदय ने अपने पुस्तक मैनेजमेंट ऑफ टेक्निकल सर्विस इन लाईब्रेरीज में बताया कि कैसे हम लाईब्रेरी टेक्निकल सर्विस के द्वारा संसाधनों का मैनेजमेंट कर सकते है। इसके अंतर्गत पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार के टेक्निकल सर्विस पदों पर ध्यान लाने पर फोकस किया है। इन्होने बताया कि पुस्तकालय में तकनीकियों के उपयोग से पुस्तकालय को एक नया आयाम दिया जा सकता है।
2. **सूद, एस. पी. (1994)–** इस पत्र में लेखक ने प्रलेखन एंव सूचना विज्ञान के साथ ही साथ पुस्तकालय में संसाधनों को व्यवस्थित करने हेतु तकनीकियों के उपयोग को महत्व दिया है। इसमे इन्होनें पुस्तकालयों में दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की सेवाओं कों तकनीकी माध्यमों पर जोर दिया है।
3. **एल.सी. मैक्यून (1966)–** एल सी मैक्यून ने अपने किताब लाईब्रेरी ऑटोमेशन में बताया कि कैसे हम विभिन्न सॉफ्टवेयरों के उपयोग से लाईब्रेरी के कार्यों को आसानी से एंव कम समय में पूरा कर सकते है जिससे कि पाठक एंव कर्मचारियों की समय में बचत हो। तथा पुस्तकालय में स्थान की कमी को भी पुस्तकालय स्वचालन के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

परिकल्पना:

a. पुस्तकालयों में पाठकों के समय को बचाना।
b. संसाधनों का डिजिटलीकरण करना।
c. संसाधनों को सुरक्षित करना।

मुख्य बिन्दू:– पुस्तकालय में कम्प्यूटर का प्रयोग सबसे पहले डॉ. एच.पी. लुहान के द्वारा किया गया उन्होनें कम्प्यूटरीकृत अनुक्रमणिका क्विक की संरचना की। हम कह सकते है कि डॉ. एच.पी. लुहान पुस्तकालय में कम्प्यूटर का प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति है।

- वर्ष 1966 में लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, अमेरिका के द्वारा प्रारम्भ की गई मार्क प्रोजेक्ट पुस्तकालय स्वचालन में एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसका उद्देष्य लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की पुस्तक सूचियों को मशीन पाठ्य रूप में तैयार करना था।
- इसके बाद 1967 मार्क का उपयोग किया जाने लगा। आज के समय में इसका नया संस्करण मार्क 21 का प्रयोग किया जा रहा है।

डेलनेट :– यह एक लाइब्रेरी नेटवर्क है जो की नई दिल्ली में स्थापित है डेलनेट का काम पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण एवं नेटवर्किंग सेवा प्रदान करना है। डेलनेट भारत के लगभग सभी राज्य की संस्थानों को जोड़ता है। इसमें विष्वद्यिलाय, कालेज, चिकित्सा, अनुसंधान, अस्पताल आदि शामिल है।

https://www.google.com/search?q=delnet+images

डेवेलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द और राष्ट्रीय विज्ञान सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से पुस्तकालयों के मध्य सूचना –स्त्रोतों में सहभागिता संयोजन विकसित किया गया जिसे पहले से ही दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क के नाम से जाना जाता था ।

आरएफआईडीः–

आरएफआईडी का पुरा नाम रेडियो फ्रीक्वेंसी आईडेंटीफिकेशन है। यह एक आधुनिक तकनीक है। जिससे की पुस्तकालयों मे पुस्तकों और पत्रिकाओं की चोरी को पकडने में उपयोग में लाया जाता है। इसका उपयोग पुस्तकालय में वस्तु सूची पर नजर रखने और पुस्तकालय प्रबंधन के कार्य में दक्षता लाने के उद्देश्य से किया जाता हैं। इस आधुनिक तकनीकी में पुस्तकालय के पुस्तक एवं अन्य पाठ्य सामग्री में एक आर एफ आई डी टैग लगाया जाता है। जो की रेडियों तरंगों के जरीये उनकी पहचान करने में या उसे खोजने में सक्षम होता है। जीसे की हमें असानी से पुस्तको की या पाठ्य समाग्री की स्थिति को पता लगाया जाता है। रेडियो फ्रीक्वेंसी आईडेंटीफिकेशन एक ऐसी अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित है जो की रेडियों तरंगो की फ्रीक्वेंसी पर आधारित आईडेंटीफिकेशन का काम करता है। इस तकनीक का उपयोग सबसे ज्यदा स्वचालित रुप से वस्तुओं की पहचान या वस्तुओं की स्थिति को जानने के लिये किया जाता है। यह एक वायरलेस आईडेंटीफिकेशन तकनीक है। आर एफ आई डी तकनीक की मुख्य रूप से दो घटक या अंश पाये जाते है जिनमें से एक है आर एफ आई डी टैग जिसमें वस्तुओं कि जानकारी डाल कर स्टोर किया जाता है और एक है आर एफ आई डी पाठक जो हम आर एफ आई डी में जानकारी स्टोर करते है उस जानकारी को रीड करता है। हम आरएफआईडी को एक साधारण से उदहारण से समझ सकते है जैसे हम किसी माल मे जाते है तो हमने देखा है कि वहा सामान के सुरक्षा के लिए कोई गार्ड नही होता है हम सामान को पकड कर सीधे सर्कुलेशन पर जाते है और वहा सामानों की एंट्री करा के बाहर जाते है। अगर हम बिना एंट्र कराए बाहर जाते है तो वहां अलार्म बज जाता है सिक्योरिटी को पता चल जाता है।

https://www.shutterstock.com/image-vector/rfid-radio-frequency-identification-technology-concept-1804842610

आरएफआईडी का उपयोगः–

आर एफ आई डी का उपयोग बहुत सारे जगहों पर अलग–अलग कार्यों के लिये किया जाता है जैसेः–

a. जानवरों की ट्रैकिंग करने के लिए
b. स्मार्ट कार्ड में

c. टोल बूथ पास में

d. पुस्तकालय के पुस्तकों पर

इसके अलावा और भी बहुत से जगहों पर अलग–अलग कार्यों के लिए आर एफ आई डी तकनीक का उपोग किया जाता है।

प्रसूचीकरण :–

पुस्तकालय में उपलब्ध प्रलेखों की सूची को प्रसूची कहते है और प्रसूची तैयार करने की प्रकिया को ही प्रसूचीकरण कहते है। पहले हम प्रसूचीकरण कार्ड में करते थे। मगर जब से कम्प्यूटर का प्रयोग पुस्तकालय में होने लगा है। तब से हम लइब्रेरी साफ्टवेयर में हम प्रसूचीकरण करते है। पुस्तकालय में प्रसूचीकरण करने का उद्देश्य यह है कि पाठको को उसकी मनचाही पठन के लिये मिल जाए या हम यह भी कह सकते है कि पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्रों की रक्षा हो सके।

प्रसूचीकरण का कार्यः–

पुस्तकालय प्रसूचीकरण का सबसे प्रमुख कार्य पुस्तक के सम्बन्ध में संपुर्ण जानकारी पाठक को प्रदान करना हैं।

a. पुस्तकालय में किस लेखक की कितनी पुस्तक पुस्तकालय मे उपलब्ध है। इसके लिए नाम प्रसूचीकरण का निर्माण किया जाता है। जिसे की पता चल सके कि पुस्तकालय में कितनी पुस्तक लेखकों की हैं

b. यह जानकारी प्रप्त करना की किस शीर्षक की पुस्तकालय में कितनी पुस्तक उपलब्ध हैं या नही है ये पता लगाया जा सकता है। इसके लिए हम शीर्षक प्रविष्टि बनाते है ताकी हमें पता चल सके की पुस्तकालय में कौन से शीर्षक का कितना पुस्तक रखा है।

c. पुस्तकालय में पुस्तक की सिरीज अैर वॉल्यूम की जानकारी के लिए सिरीज और वॉल्यूम प्रविटि बनाया जाता है।

d. पुस्तकालय में किसी विषय की कितनी पुस्तक है इसकी जानकारी के प्राप्त करने के लिए विषय सूची बनाया जाता है।

e. सूची बनाने से अन्य जानकारी भी उपलब्ध हो जाता है जैसेः– सीरीज, खण्ड, पेज, आदि की जानकारी हमें प्राप्त हो जाती है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सूची पुस्तकालय के लिए एक उपकरण है जिसे पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पाठ्य पुस्तको के बारे में जानकारी उपलब्ध कराता है तथा संबंधित जानकारी प्रसूचीकरण द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

परिसंचालनः– पुस्तकालय परिसंचालन या पुस्तकालय में उधार देने वाली पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं को पुस्तकें और अन्य सामग्री उधार देने से संबंधित कार्य शामिल है। परिसंचालन विभाग किसी भी पुस्तकालय के प्रमुख विभाग में से एक विभाग होता है।

परिसंचालन विभाग पुस्ताकलय का मुख्य विभाग है जो की पुस्तकालय के मुख्य द्वार के पास होता है। जिसे की कोई भी उपयोक्र्ता आता है तो उन्हे पुस्तक जारी करने में असानी हो सके। पुस्ताकलय में कम्प्यूटर के आने से परिसंचालन विभाग का भी काम असान हो गया है। क्योकि परिसंचालन विभाग में बहुत से काम होते है। जो की कम्प्यूटर के आने के बाद से बहुत असान हो गया है और काम भी जल्दी हो जाता है जब हम कोई पुस्तक जारी करवाते है तो अब साफ्टवेयर से करते है तो समय कम लगता है और जिसे हम पुस्तक जारी कर रहे है उनका सभी जानकारी हमारे पास एक डाटा के रूप में हमारे पास सुरक्षित हो जाती है जिससे की काम कारने में हमे असानी हो जाती है।

परिसंचालन डेस्क कर्मचारी के कार्य :–

परिसंचालन विभाग पुस्तकालय का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विभाग होता है। इस विभाग में ही पुस्तकालय के जो भी पाठ्य सामग्री होती हैं उसका अदान–प्रदान किया जाता है। इस लिए यह विभाग पुस्तकालय का महत्वपूर्ण विभाग है। इस विभाग के कर्मचारीयों के कार्य निम्न प्रकार से हैः–

1. पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को सामग्री उधार देना।
2. लौटाई गई सामग्री।
3. पुस्तकालय में क्षतिग्रस्त सामग्रियों की जाच करना और उन्हे मरम्मत करने के लिए उपयुक्त कर्मचारियों तक पहुंचाने का कार्य करना।
4. पुस्तकालय की पुस्तक को कोई पाठक तय समय के बाद लाता है तो उसमें जुर्माना वसूलना या प्राप्त करना।
5. नए सॉफ्टवेयर और नए उपकरणों का उपयोग करना।

पुस्तकालय स्वचालन :–

पुस्तकालय स्वचलन का अर्थ पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं की जानकारी को कम्प्यूटर के प्रयोग द्वारा पूरा करना है या हम यह भी कह सकते है कि पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं को कम्प्यूटरीकृत स्वरूप में प्रदर्षित करना होता है जिससे की सूचना प्रौद्योगिकी से बहुत प्रभावित रहता है। पुस्ताकलय स्वचलन पुस्तकालय के दैनिक कार्यो से लेकर सूचना प्राप्ति में बहुत ही प्रभावी होता है। खोज नेटवर्क से सम्बंधि कार्यो से अपने लक्ष्य तक पहुचा जा सकता है।

पुस्तकालय स्वचालन के उद्देश्यः–

पुस्तकालय स्वचलन के मुख्य उद्देश्य पुस्तकालय के उपयोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति कौशल के साथ करना होता है। पुस्तकालय स्वचालन के लिए मुख्य बात उपयुक्त साफ्टवेयर का चयन करना होता है। जो पुस्तकालय स्वचालन को सही तरीके से कर सके अगर उपयुक्त सॉफ्टवेयर का चयन सही तरीके से नही किया गया तो पुस्तकालय को सही से स्वचालन नही कर पायेगें।

पुस्तकालय स्वचालन के लाभ :–

पुस्ताकलय में स्वचालन लागू होने के बहुत से लाभ हैः–

- ❖ पुस्तकालय के कार्यो में सरलता आती है जैसे बडे–बडे काम जिन्हे करने में कर्मचारियों को अधिक समय लगता था वे स्वचालन की सहायता से कम समय और सरलता से हो जाता है।
- ❖ पुस्तकालय में स्वचालन का उपयोग करने से हमें कार्य में परिशुद्धता देखने को मिलता है मानव यदि कोई काम करता है तो उसमें गलती होना स्वभाविक होता है क्योकि मानव स्वभाव को बहुत से कारक प्रभावित करते है जिसे की गलतियाँ हो जाती है। मगर स्वचालन में गलतियाँ होने की कोई सम्भावना नही होती है।
- ❖ पुस्तकालय में स्वचालन से त्वरित सेवा प्रदान हो जाता है पुस्तकालय में अनेक कार्य होते है जिन्हे मनुष्य द्वारा करने में बहुत समय लगता है उसे स्वचालन विधि का उपयोग कर के जल्दी से और असानी से कर सकते है।
- ❖ पुस्तकालय स्वचालन से श्रम, धन एवं समय की बचत होती है जिसे की पुस्तकालय को लाभ प्राप्त होता है।
- ❖ पुस्तकाल मे स्वचालन का उपयोग कर के हम पुस्तकालय में उत्तम सेवा प्रदान कर सकते है।

ई– पुस्तकालयः–

एक डिजिटल पुस्तकालय से अभिप्राय यह है कि इलेक्ट्रोनिक प्रारूप में एकत्रित दस्तावेजों से है जो की हमें इन्टरनेट कम्प्यूटर डिस्क मोबाइल पर उपलब्ध होते है। यह एक विशिष्ट पुस्तकालय पर आश्रित दस्तावेज होते है। हम कह सकते है की जो पुस्तके पहले हम हार्ड कापी के रूप में पढते है उसी को हम

ई–पुस्तकालय मे हम उसे कम्प्यूटर या मोबाइल आदि में पढ़ सकते है ई–पुस्तकालय ने पाठकों को बहुत सुविधा प्रदान की है। पहले पाठक को पुस्तकालय के समय के अनुसार पुस्तकालय में रह कर पढ़ना पड़ता था। अब ई–पुस्तकालय के माध्यम से अब पाठक कभी भी कही भी अपने इन्टरनेट के माध्यम से मोबाइल से कही भी पढ़ सकते है। आज के समय में ऐसा है कि हमें सभी पुस्तकालय में हमें ई–पुस्तकालय देखने को मिल जाता है और ये सही भी है क्योकि पहले जो जानकारी होता था हमें बहुत देर से प्राप्त होता था मगर इन्टरनेट के माध्यम से हमे बहुत जल्दी ही जानकारी प्राप्त हो जाती है।

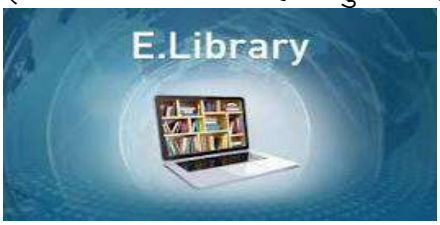

https://www.google.com/search?q=e+library+images&sca_esv=570249222&rlz=1C1CHBD

इंटरनेट :–

इंटरनेट आने के बाद से हम देखे तो सभी जगह में बहुत परिवर्तन हुआ हैं इसमें से एक जगह पुस्तकालय भी है इंटरनेट के आने के बाद पुस्तकालय में बहुत तेजी आई है क्योकि अब हमें पुस्तकालय में ई–पुस्तकालय की सुविधा भी प्राप्त होती है जिसे की हमें इंटरनेट से जानकारी बहुत जल्दी प्राप्त हो जाता है। जिससे की पाठक को जो जानकारी की आवश्यकता होती है वह इंटरनेट से जल्दी से प्राप्त कर लेते है। इंटरनेट के माध्यम से आज हम कुछ में संदेश किसी को भेजना होता है तो हम जल्दी से भेज सकते है। संदेष भेजने का आज बहुत से माध्यम है जैसे की ई–मेल के माध्य से या आज काल जो सब से ज्यदा प्रयोग हो रहा है व्हाट्सएप के माध्यम से भेज सकते है। कहने कह यह मतलब है कि इंटरनेट आने के बाद से जानकारी प्राप्त करने मे तेजी आई है जिसे की बहुत तेजी से समाज में भी बदलाव आया है इंटरनेट के आने के बाद से पुस्तकालय के कार्य करने या जानकारी प्रदान करने के तरीके में भी बहुत बदलाव आया है। अब पुस्तकालय में जानकारी प्राप्त बहुत जल्दी से हो जाता है।

ओपेकः–

ओपेक ''ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस प्रसूची'' के लिए एक संक्षेप शब्द या नाम है। यह पुस्तकालय के संग्रह के लिए एक अभिगम उपकरण है जो मशीन में पाठनीय रूप में ग्रंथ सूची को डेटा में प्रदान करता है और पाठकों द्वारा कम्प्यूटर पर असानी से खोजा या प्राप्त किया जा सकता है।

ओपेक ने पुस्तकालय में अपनी उपस्थिति 1960 के दशक के मध्य में दर्ज कराई है। जब ओपेक को इटरनेट के द्वारा सभी के पास पहुचाया जाता है तो इसको हम वेब ओपेक कहते हैं ओपेक के कारण ही पुस्ताकलय में पुस्तक और बाकि सामग्री को खोजना असान हो जाता हैं।

पुस्तकालय सॉफ्टवेयर :–

ऐसा सॉफ्टवेयर जिसमें पुस्तकालय के सभी पुस्तक पत्र–पत्रिका के बारे में जानकारी होती है जिसे की हमें काम करने में असानी होती है हम यह कह सकते है कि सॉफ्टवेयर पुस्तकालय डेटा और प्रोग्रामिंग कोड का एक सूट है जिसका उपयोग सॉफ्टवेयर और एप्लिकेशन को विकसित करने के लिए किया जाता हैं।
पुस्तकालय में उपयोग होने वाले सॉफ्टवेयर निम्नलिखित हैः–

- **सोल**

यह सॉफ्ट्वेयर विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के लिए सॉफ्टवेयर सोल कॉलेज और विश्वविद्यालय की आवश्यकता विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के लिए सॉफ्टवेयरः एक अत्याधुनिक एकीकृत पुस्तकालय प्रबंधन

सॉफ्टवेयर है जिसे कॉलेज और विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की आवश्यकताओं के आधार पर इसे डिजाइन किया गया है।

https://www.google.com/search?q=soul+software+images&sca_esv=570249222&rlz=1C1CHBD_enIN1070IN

➢ **कोहा**

कोहा एक खुला स्रोत एकीकृत पुस्तकालय प्रणाली है जिसका उपयोग सार्वजनिक स्कूल और विशेष पुस्ताकलयों द्वारा विश्व भर में किया जाता है। कोहा एक वेब आधारित आईएलएस है, जिसमें एसक्यूएल डेटाबेस है जिसमें कैटलॉग डेटा मार्क में संग्रहीत है और जेड 39.50 के माध्यम से पहुंचा जा सकता है

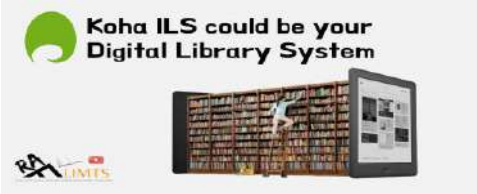

https://www.google.com/search?q=koha+e+library+images&sca_esv=570249222&rlz=1C1CHBD_enIN1070IN

➢ **संजय**

एक मॉडल लाइब्रेरी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पास्कल इंटरफेस का उपयोग करके बड़े स्तर पर सीडीएस/आईएसआईएस वातावरण में एक लाइब्रेरी ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर पैकेज संजय विकसित किया गया है। संजय का उपयोग करके उपयोगकर्ता कई डेटाबेस से जानकारी, प्रश्नों के उत्तर और रिपोर्ट तक आसानी से पहुंच प्रदान करता है। यह एक इंटरैक्टिव मेनू संचालित और उपयोगकर्ता के अनुकुल पैकेज है जो कि लाइब्रेरी के नियमित कार्यों को पूरा कर सकता है।

➢ **ग्रीनस्टोन**

ग्रीनस्टोन डिजिटल लाइब्रेरी संग्रह के निर्माण और वितरण के लिए सॉफ्टवेयर का एक सूट है। यह जानकारी को व्यवस्थित करने और उसे वेब पर या डीवीडी और यूएसबी ड्राइव जैसे हटाने योग्य मीडिया पर प्रकाशित करने का एक तरीका प्रदान करता है। ग्रीनस्टोन का निर्माण वकाईटो विश्वविद्यालय में न्यूजीलैंड डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट द्वारा विकसित किया गया है।

➢ **डेलप्लस**

सभी प्रकार के पुस्तकालयों के अंतर्गत कार्य करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन और विकसित किया गया सॉफ्टवेयर है। यह मार्क 21 जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुशंसित मानकों और प्रारूपों का पालन करता है। यह छोटे और मध्यम आकार के पुस्तकालयों के लिए सर्वोत्तम जिनमें एक लाख से अधिक तक का संग्रह

है। इसके अलावा और भी प्रकार के सॉफ्टवेयर विकसित हो गये है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों में किया जा रहा है।

https://www.google.com/search?q=delplus++library+images&sca_esv=570249222&rlz=1C1CHBD_enIN1070I

परिकल्पना की जॉचः–

पुस्तकालयों सेवाओं में कम्प्यूटर एवं तकनीकियों के उपयोग से सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार की विभिन्न नीतियों के सहीं संचालन के कारण संभव हो सका हैं। इस लेख की जांच करने पर यह ज्ञात होता है कि सूदूर क्षेत्रों के पाठकों को आसानी से शिक्षा प्रदान करने में पुस्तकालय स्वचालन एंव विभिन्न तकनीकियों के माध्यम से सेवायें प्रदान किया जा सकता है। कम्प्युटर की सहायता से अधिक से अधिक विद्यार्थियों एवं पाठकों को जोड़ा जा रहा है और यह संभव हुआ है विभिन्न प्रकार के सूचना केंद्रों एंव विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण जिससे विद्यार्थियों तक ऑनलाइन शिक्षा के स्तर में बढ़ोत्तरी देखी गई है। इस परिकल्पना की जांच से हमने पाया की अगर सरकार एंव उनके तकनीकी एजेंसी तथा उनकी नीतियों को सही तरीके से अमल किया जाये तो पुस्तकालय की उपयोग को और भी बेहतर स्थिति में कुछ ही समय बाद लाया जा सकता इस पत्र में परिकल्पना की जांच में यह पाया गया है कि पुस्तकालयों में पाठकों के समय की बचत होती है। इस शोध में यह पाया गया। उभरती हुई तकनीकों को पुस्तकालयों ने अपनाया जिससे कि पुस्तकालयों सेवाओं के अधिकत्तर विभागों में डिजिटलीकरण संभव हुआ है। संसाधनों को सुरक्षित करने के लिए आरएफआईडी जैसे तकनीकियों को अपनाया जा रहा है जिससे कि संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई है।

निष्कर्षः–

अपनी तेज गति एंव नेटवर्किंग क्षमताओं और अन्य अपराजेय गुणों के आधार पर कम्प्यूटर मानव गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अपरिहार्य स्थान बना चुका है। आज के पुस्तकालय भी इसके प्रभाव से छूट नहीं पाते है। कम्प्यूटर का प्रयोग न केवल पुस्तकालय सेवा के स्तर को उंचा उठाता है बल्कि पुस्तकालय कर्मचारियों को बारंबारिता वाले कार्यों को भी दिलाता है। पुस्तकालयों में कम्प्यूटर के प्रवेश एंव प्रयोग से सूचना की बाढ़ को नियंत्रित कर सही पाठक को सही समय पर सही सूचना प्रदान करने में सराहनीय सहायता मिली है। अतः आज के पुस्तकालयों के सामने दो ही रास्ते है यातो कम्प्यूटर को अपना मित्र बना ले या पाठकों को अपना मित्र बनाने के लिए तैयार रहें । प्रस्तुत पत्र में इस कमी को दूर करने की दिशा में एक नम्र प्रयास है। आशा है पुस्तकालयों में कम्प्यूटर के प्रयोग से संबधित विभिन्न पहलुओं के उपर सरल हिंदी भाषा में लिखी गई यह पत्र पुस्तकालयाध्यक्षों, पुस्तकालय विज्ञान के विद्यार्थियों एंव शिक्षकों तथा पुस्तकालय प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सन्दर्भ सूचीः–

1) शर्मा, प्रहलाद (2012)– पुस्तकालय प्रबन्ध, युनीवर्सिटी प्रकाशन, जयपूर राजस्थान पेज संख्या 260 से 267।
2) व्यास, एस. डी. (1990)– मैनेजमेंट ऑफ टेक्निकल सर्विस इन लाईब्रेरीज, बी. आर. पब्लिकेशन दिल्ली।
3) सूद, एस. पी. (1994)– प्रलेखन एंव सूचना विज्ञान , जयपुर, राज पब्लिकेशन हाउस।
4) एल.सी. मैक्यून (1966)– लाईब्रेरी ऑटोमेशन, अमेरिकन लाईब्रेरी एसोसिएशन
5) https://www.prabhatbooks.com/computer-aur-pustakalaya.htm
6) https://www.divanshugeneralstudypoint.in/2020/09/Library-Exam-notes%20.html#:
7) https://www.jstor.org/stable/25697660
8) https://www.getapp.com/industries-software/library-automation/
9) https://research.com/software/best-library-management-software
https://books.google.co.in/books/about/Bibliography_of_Library_Automation.html?id=hcjUugEACAAJ&redir_esc=y

■ ■ ■